"दामोदर मोरे की कविताओं का अनुशीलन"

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्याशाखा अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रुपरेखा

शोधछात्र

विशाल विजय सोनवणे

एम.ए., सेट (हिंदी)

शोधनिर्देशक

डॉ.बालाजी विलासराव महाळंकर

हिंदी विभागाध्यक्ष,

कै.बापूसाहेब पाटील एकंबेकर महाविद्यालय,

उदगीर ता.उदगीर जि.लातूर

जनवरी, 2024

"दामोदर मोरे की कविताओं का अनुशीलन"

भूमिका :

मानवी जीवन में साहित्य भावों को व्यक्त करने का प्रभावशाली माध्यम है। साहित्य अपना सामाजिक दायित्व निभाते हुए जनमानस में चेतना जागृत करने का कार्य निरंतर करता है। दलित, स्त्री, आदिवासी आदि की चेतना को अभिव्यक्त करने का कार्य साहित्य ने किया है, जो वर्तमान दौर की आवश्यकता है। हिंदी कविता, भावनाओं और विचारों को सुंदरता के साथ व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। यह समाज, प्रेम, प्राकृतिक सौंदर्य और मानवीय अनुभूतियों को साझा करने का एक सुंदर तरीका है। कविता एक शक्तिशाली साहित्यिक माध्यम है जो सामाजिक मुद्दों और दलित संवेदना को साझा करने का माध्यम है। कविता के माध्यम से दलित, स्त्री, आदिवासी चेतना को प्रकट करने से समाज में समानता और अधिकार की पहल होगी। कविताएँ अक्सर सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों पर आधारित होती है और उनमें उच्चतम और गहरी भावनात्मकता होती है। इससे पढ़ने वाले को समाज में सत्य और संवेदनशीलता की भावना मिलती है, और वह जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए प्रेरित हो सकता है। दलित साहित्य में ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, सूरजपाल चौहान, मोहनदास नैमिशराय आदि दलित लेखकों ने दलित कविता से दलितों की वास्तविकता को समाज के सामने रखने का कार्य किया है।

दामोदर मोरे मराठी भाषिक हिंदी कवि हैं। वे अम्बेडकरी विचारधारा से प्रेरित और प्रभावित हैं। उनका लेखन मूलत: मराठी तथा हिंदी दोनों भाषाओं में प्रकाशित रहा है। दामोदर मोरे आधुनिक काव्य साहित्य के लोकप्रिय कवि हैं। उनके साहित्य की विशेषता यह है कि उनकी रचनाओं में दलित चिंतन और प्रगतिशील सामाजिक दृष्टिकोण है। स्त्रियों की दमित स्थिति उनके सामाजिक आर्थिक शोषण तथा उन पर

हो रहे अनेक अत्याचारों के प्रति अपने लेखन के माध्यम से रोष प्रकट किया है। पितृसत्ताक समाज में स्त्रियों के प्रति अत्याचार और अन्य प्राचीन समय से आधुनिक काल तक विद्यमान है। दलित, आदिवासी स्त्रियों की स्थिति और भी दुय्यम दर्जे की है। उनके अपने प्रति हो रहे अत्याचार का प्रतिकार तो दूर आवाज तक उठाने का भी उन्हें हक उन्हें नहीं दिया जाता। समाज की उच्च वर्ग की स्त्रियाँ जहाँ दबे पीछे शोषण की शिकार है वही दलित, आदिवासी स्त्रियों को खुले आम शोषण का शिकार बनाया जाता है। उनकी इस दयनीय दशा से हमें दामोदर मोरे की **'पिछला चक्का'** में संकलित कविताएँ अवगत कराती है। इतिहास में पुरुष ने स्त्रियों को दर्जा तो देविका दिया परंतु उसे अपने दासी बनाए रखा है। 'पुरुष' और 'देवी या दासी' कविताओं में कवी दामोदर मोरे ने इन्हीं समस्याओं को दिखाया है। 'सादियों के बहते जख्म', 'नीले शब्दों की छाया में' (अंबेडकरवादी काव्य संकलन), 'पलके सुलग रही है' आदि कविता संग्रह में दलित चेतना को कवी दामोदर मोरे ने व्यक्त किया है। इसी के साथ इनके अनेक कविताओं में कहानियों में समाज के अलग-अलग रूप, घटना आदि प्रसंगों को व्यक्त किया है इसलिए मैंने दामोदर मोरे की कविताओं का अनुशीलन यह विषय चयन किया है।

विषय चयन की प्रेरणा :

मुझे छात्र जीवन से ही कविता के प्रति रुचि रही है। मैंने हिंदी की कई कविताएँ पढ़ी लेकिन मुझे ज्यादा रुचि दलित साहित्य के प्रति रही। इसलिए मैंने दलित साहित्य और दलित कविताओं को पढ़ा। मैंने मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम इनकी रचनाएँ पढ़ी तब ऐसा महसूस हुआ कि आज भी दलितों का दुख कम नहीं हुआ है। इसी के साथ मैंने दामोदर मोरे के कविताओं को पढ़ा उनकी कविताओं में जाति भावना न होकर जाति अंत का विचार है। उनकी

कविताओं में ऊँच-नीच, अंधश्रद्धा और अवैज्ञानिकता आदि का विरोध है। उनकी कविता मानवतावादी और समता की पुरस्कृत कविता हैजो मुझे बहुत अच्छी लगती है।

दामोदर मोरे का 'पिछला चक्का', 'पलके सुलग रही है', 'नीले शब्दों की छाया में', 'सादियों के बहते जख्म' आदि काव्यसंग्रह में प्रगतिवादी कविताएँ हैं। इनकी दलित चेतना से संबंधित कविताएँ संघर्ष में सौंदर्य बोध कराती है। दलित सौंदर्य बोध दलितों के साथ स्त्रियों के लिए सामान्य एवं सामाजिक न्याय की अध्ययन आकांक्षा को शक्ति देती है विशेष कर मानवीयता के स्तर पर सामान्य दलित लेखकों का अध्याय है। दामोदर मोरे की कविताओं को पढ़ने के बाद मुझे उनकी कविताओं पर अनुसंधान करने की जिज्ञासा हुई इस विषय को लेकर मैंने मेरे मार्गदर्शक डॉ.बालाजी महाळंकर के साथ इस विषय पर गहन चर्चा कर मुझे उनकी कविताओं पर अनुसंधान करने का सुझाव दिया इसलिए मैंने इस विषय का चयन किया है।

अंतरविद्याशाखीय संबंध :

प्रस्तुत विषय साहित्य के साथ ज्ञान की अन्य शाखों के साथ भी अन्य रूप से जुड़ा हुआ है। वर्तमान साहित्य में यह विषय अहम भूमिका निभाता है। इस विषय के द्वारा समाज की वास्तविकता का अध्ययन किया जाने वाला है। यह विषय एक बहुत संख्या वर्ग की स्थिति से हमें अवगत कराता है। दामोदर मोरे जी दलित साहित्य के कवि के साथ-साथ नारी व्यथा और पर्यावरणीय चिंतक के कवि हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में पर्यावरण के संबंध में अपने विचार गहराई के साथ प्रस्तुत किया है। वर्तमान में हो रहे पर्यावरणीय प्रदूषण पर अपनी चिंता जताई है। दलित, नारी और पर्यावरणीय अनुशीलन में जागरूकता लाना एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रसारित करना अत्यंत आवश्यक है। अतः स्पष्ट है कि अंतरविद्याशाखीय अध्ययन के दृष्टिकोण से इस विषय का अध्ययन, अनुसंधान कार्य विशिष्ट महत्व रखता है।

विषय की व्यापकता :

दामोदर मोरे जी प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं। उन्होंने विभिन्न भाषाओं में अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने मराठी भाषा में भी कई काव्य संग्रह लिखे हैं। मैंने अध्ययन की सुविधा के लिए केवल उनकी हिंदी की कविताओं का ही चयन किया है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत अनुसंधान के निम्नलिखित उद्देश्य है :

1) दामोदर मोरे जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करना।

2) दामोदर मोरे जी की कविताओं का सामाजिक दृष्टि से अध्ययन करना।

3) दामोदर मोरे जी की कविताओं में व्यक्त आंबेडकर के विचारों का अध्ययन करना।

4) दामोदर मोरे जी की कविताओं में चित्रित पर्यावरणीय विचारों का अध्ययन करना।

5) दामोदर मोरे जी की कविताओं में चित्रित दलित जीवन एवं नारी जीवन का अध्ययन करना।

6) दामोदर मोरे जी की कविताओं का सैद्धांतिक शिल्पगत अध्ययन करना।

अनुसंधान पद्धति :

प्रस्तुत अनुसंधान में वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तुत शोध में विषय का वस्तुनिष्ठ और तथ्यात्मक पद्धति से अध्यन किया जाएगा। इसी आधार पर प्राप्त निष्कर्ष निकाले जायेंगे।

शोधकार्य का प्रारूप :

अनुसंधान की दृष्टि से शोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया गया है-

प्रथम अध्याय : दामोदर मोरे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय : दामोदर मोरे की कविताओं में सामाजिकता

तृतीय अध्याय : दामोदर मोरे की कविताओं में आंबेडकरवादी दृष्टि

चतुर्थ अध्याय : दामोदर मोरे की कविताओं में पर्यावरण

पंचम अध्याय : दामोदर मोरे की कविताओं का शिल्प

षष्टम अध्याय : उपसंहार

प्रथम अध्याय : दामोदर मोरे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तुत अध्याय में दामोदर मोरे जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला जाएगा। दामोदर मोरे के व्यक्तित्व में उनका जन्म, जन्म स्थान, शिक्षा, परिवार, नौकरी, पुरस्कार तथा व्यक्तित्व की विभिन्न विशेषताओं पर प्रकाश डाला जाएगा। कृतित्व में उनका साहित्यिक परिचय या साहित्यिक मान्यताओं पर प्रकाश डाला जाएगा। मराठी, हिंदी भाषा के सामाजिक प्रतिबद्धता के लेखक, कुशल कहानीकार, कवि, समीक्षक, पटकथा संवाद लेखक, आंबेडकरी आंदोलन के भाष्यकार, बाल साहित्यकार, चित्रकार इनके प्रतिभावान बहुमुखी प्रतिभा के धनी रूप को प्रस्तुत किया जाएगा।

द्वितीय अध्याय : दामोदर मोरे की कविताओं में सामाजिकता

प्रस्तुत अध्याय में दामोदर मोरे की कविताओं में चित्रित सामाजिक चेतना का अध्ययन किया जाएगा। इस अध्याय में सामाजिक चेतना का अर्थ, राजनीतिक चेतना, आर्थिक चेतना, धार्मिक चेतना आदि का अध्ययन किया जाएगा। साथ में दलित जीवन, नारी चित्रण, मानवीय मूल्यों का चित्रण, अंधश्रद्धा, लिंगभेद आदि का विरोध, कृषक एवं मजदूरों का चित्रण चित्र और पारिवारिक जीवन आदि पर गहराई से प्रकाश डाला जाएगा।

तृतीय अध्याय : दामोदर मोरे की कविताओं में आंबेडकरवादी दृष्टि

प्रस्तुत अध्याय में दामोदर मोरे की कविताओं पर डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के विचारों के प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में दामोदर मोरे की कविताओं में विषमता की जगह समता का चित्रण, अस्पृश्यता, छुआछूत और जातीय भेदभाव, उच-नीच आदि का विरोध। शोषक वर्ग का विरोध और शोषण एवं सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति का चित्रण, वर्ग संघर्ष का विरोध, शिक्षा का महत्व आदि कई बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाएगा।

चतुर्थ अध्याय : दामोदर मोरे की कविताओं में पर्यावरण

प्रस्तुत अध्याय में दामोदर मोरे जी के कविताओं में चित्रित पर्यावरणीय वर्णन बहुत सुंदर है। उनकी कविताओं में चित्रित पेड़, पौधे, हरियाली का चित्रण, प्रकृति की विभिन्न छाटा, पेड़ पौधों के प्रति आस्था, पर्यावरण की उदात्तता एवं उपयोगिता, हवा, पानी, प्रदूषण पर चिंता आदि का विस्तृत अध्ययन करना है।

पंचम अध्याय: दामोदर मोरे की कविताओं का शिल्प

पंचम अध्याय में दामोदर मोरे की कविताओं का काव्य शिल्प की दृष्टि से सैद्धांतिक अध्ययन किया जाएगा। उनकी कविताओं की भाषा का अध्ययन करते वक्त उनकी कविताओं में आयी विभिन्न शैलियों का अध्ययन किया जाएगा। साथ में कविताओं में आए अलंकार, अन्य भाषाओं के शब्द, लोकोक्तियाँ, मुहावरे आदि का भी अध्ययन किया जाएगा।

षष्ठम अध्याय : उपसंहार

उपसंहार में सभी अध्यायों का सारांश दिया जाएगा और इस शोध कार्य के निष्कर्ष बिंदुओं को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

आधार ग्रंथ सूची:

1) प्रा.दामोदर मोरे-सदियों के बहते जख्म, 2001

2) प्रा.दामोदर मोरे-पलके सुलग रही हैं, 2004

3) प्रा.दामोदर मोरे-नील शब्दों की छाया में, 2007

4) प्रा.दामोदर मोरे-पिछला चक्का, 2007

5) नीली सुबह (प्रकाशाधिन)

6) अब चुप न रहेगी चुड़ियाँ (प्रकाशाधिन)

7) रोशनी के अक्षर (प्रकाशाधिन)

8) कबीर केंद्री कविता संग्रह (प्रकाशाधिन)

9) आंबेडकरवादी हाइकु भाग-1 (प्रकाशाधिन)

10) आंबेडकरवादी हाइकु भाग-2 (प्रकाशाधिन)

11) वक्त की उड़ान (प्रकाशाधिन)

शोधछात्र

विशाल विजय सोनवणे

शोधनिर्देशक

डॉ.बालाजी विलासराव महाळंकर

हिंदी विभागाध्यक्ष

कै.बापूसाहेब पाटील एकंबेकर महाविद्यालय,

उदगीर ता.उदगीर जि.लातूर